1968G Ode to Veer by Sakalkirti

Sa-apt Vibhakticam Veerashtkam by Sakalkirti (In Sumati Sandesh, 1968)

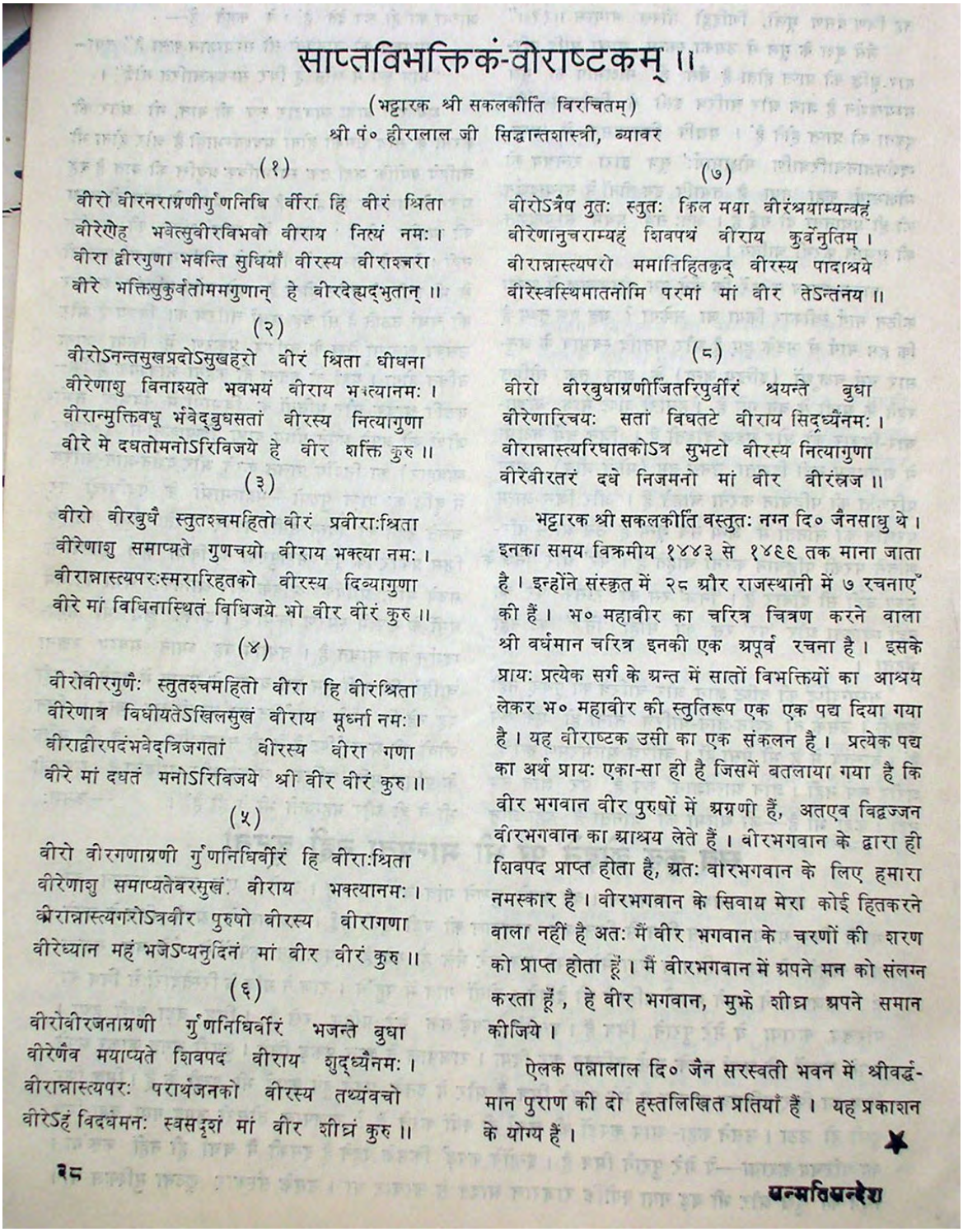

साप्तविभक्तिकं-वीराष्टकम् ।।

(भट्टारक श्री सकलकीर्ति विरचितम्)

श्री पं० हीरालाल जी सिद्धान्तशास्त्री, ब्यावर

(१)

वीरो वीरनराग्रणीर्गुणनिधि र्वीरं हि वीरं श्रिता
वीरेणेह भवेत्सुवीरविभवो वीराय नित्यं नमः ।
वीरा द्वीरगुणा भवन्ति सुधियाँ वीरस्य वीराश्चरा
वीरे भक्तिसुकुर्वतोममगुणान् हे वीरदेह्यद्भुतान् ।।

(२)

वीरोऽनन्तसुखप्रदोऽसुखहरो वीरं श्रिता धीधना
वीरेणाशु विनाश्यते भवभयं वीराय भक्त्यानमः ।
वीरान्मुक्तिवधू र्भवेद्बुधसतां वीरस्य नित्यागुणा
वीरे मे दधतोमनोऽरिविजये हे वीर शक्तिं कुरु ।।

(३)

वीरो वीरबुधै स्तुतश्चमहितो वीरं प्रवीराःश्रिता
वीरेणाशु समाप्यते गुणचयो वीराय भक्त्या नमः ।
वीरान्नास्त्यपरःस्मरारिहतको वीरस्य दिव्यागुणा
वीरे मां विधिनास्थितं विधिजये भो वीर वीरं कुरु ।।

(४)

वीरोवीरगुणैः स्तुतश्चमहितो वीरा हि वीरंश्रिता
वीरेणात्र विधीयतेऽखिलसुखं वीराय मूर्ध्ना नमः ।
वीराद्वीरपदंभवेद्त्रिजगतां वीरस्य वीरा गणा
वीरे मां दधतं मनोऽरिविजये श्री वीर वीरं कुरु ।।

(५)

वीरो वीरगणाग्रणी र्गुणनिधिर्वीरं हि वीराःश्रिता
वीरेणाशु समाप्यतेवरसुखं वीराय भक्त्यानमः ।
वीरान्नास्त्यगरोऽत्रवीर पुरुषो वीरस्य वीरागणा
वीरेध्यान महं भजेऽप्यनुदिनं मां वीर वीरं कुरु ।।

(६)

वीरोवीरजनाग्रणी र्गुणनिधिर्वीरं भजन्ते बुधा
वीरेणैव मयाप्यते शिवपदं वीराय शुद्ध्यैनमः ।
वीरान्नास्त्यपरः परार्थजनको वीरस्य तथ्यंवचो
वीरेऽहं विदधेमनः स्वसदृशं मां वीर शीघ्रं कुरु ।।

(७)

वीरोऽत्रैष नुतः स्तुतः किल मया वीरंश्रयाम्यन्वहं
वीरेणानुचराम्यहं शिवपथं वीराय कुर्वेनुतिम् ।
वीरान्नास्त्यपरो ममातिहितकृद् वीरस्य पादाश्रये
वीरेस्वस्थिमातनोमि परमां मां वीर तेऽन्तंनय ।।

(८)

वीरो वीरबुधाग्रणीर्जितरिपुर्वीरं श्रयन्ते बुधा
वीरेणारिचयः सतां विघटते वीराय सिद्ध्यैनमः ।
वीरान्नास्त्यरिघातकोऽत्र सुभटो वीरस्य नित्यागुणा
वीरेवीरतरं दधे निजमनो मां वीर वीरंत्रज ।।

भट्टारक श्री सकलकीर्ति वस्तुतः नग्न दि० जैनसाधु थे। इनका समय विक्रमीय १४४३ से १४९९ तक माना जाता है। इन्होंने संस्कृत में २८ और राजस्थानी में ७ रचनाएँ की हैं। भ० महावीर का चरित्र चित्रण करने वाला श्री वर्धमान चरित्र इनकी एक अपूर्व रचना है। इसके प्रायः प्रत्येक सर्ग के अन्त में सातों विभक्तियों का आश्रय लेकर भ० महावीर की स्तुतिरूप एक एक पद्य दिया गया है। यह वीराष्टक उसी का एक संकलन है। प्रत्येक पद्य का अर्थ प्रायः एका-सा ही है जिसमें बतलाया गया है कि वीर भगवान वीर पुरुषों में अग्रणी हैं, अतएव विद्वज्जन वीरभगवान का आश्रय लेते हैं। वीरभगवान के द्वारा ही शिवपद प्राप्त होता है, अतः वारभगवान के लिए हमारा नमस्कार है। वीरभगवान के सिवाय मेरा कोई हितकरने वाला नहीं है अतः मैं वीर भगवान के चरणों की शरण को प्राप्त होता हूँ। मैं वीरभगवान में अपने मन को संलग्न करता हूँ, हे वीर भगवान, मुझे शीघ्र अपने समान कीजिये।

ऐलक पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन में श्रीवर्द्धमान पुराण की दो हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। यह प्रकाशन के योग्य हैं।